किसानों का संकट और प्रेमचंद के विचार

सुशील कुमार सिंह

प्रेमचंद ने किसानों की दीनहीन दशा को बहुत नजदीक से देखा था। कृषि प्रधान क्षेत्र में जन्मभूमि होने के कारण किसानों के दैनिक जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से वाकिफ थे, इसलिए किसान जीवन के दुर्दशा के सवाल प्रेमचंद के विचारों के केन्द्र में थे। जिनकी सच्चाई को उन्होंने सहजता से साहित्य पटल पर रखा है।

प्रेमचंद यह मानते थे कि इस देश की आजादी तब तक संभव नहीं जब तक देश के किसानों और मजदूरों का राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक शोषण और भेदभाव बन्द हो जायेगा। उन्होंने वर्ण, धर्म, जाति, सम्प्रदाय को इनके उत्थान में एक बड़ी बाधा माना। प्रेमचंद ने अपने लेखन के माध्यम से देश में दबे, कुचले लोगों की आवाज को अपने लेखन के माध्यम से उठायी, जिन्हें लेखकों ने निरीह एवं अप्रासंगिक समझकर उन्हें कम महत्व दिया था।